 ISSN : 2583-2948

साहित्येतर क्षेत्रों में हिंदी की भूमिका एवं रोजगार संभावनाएं

डॉ रूपाचारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी
श्री मल्लिकार्जुन डिग्री कॉलेज
कंकोना, गोवा

सारांश :

संचार माध्यम से जुड़ा साहित्येतर सर्जनात्मक लेखन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 'सर्जनात्मक लेखन' के बारे में रवींद्र भ्रमर लिखते हैं कि 'सर्जन अथवा सर्जना साहित्य अथवा कला के निर्माण की प्रक्रिया है जिसके द्वारा कवि अथवा कलाकार का अमूर्त भावमूर्त बनता है।'[1] साहित्य और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों ही अभिव्यक्ति के शक्तिशाली माध्यम हैं। साहित्येतर लेखन में समाचार, विज्ञापन, लेख, फीचर, वृत्तचित्र , धारावाहिक, साक्षात्कार, उद्घोषणा, सूत्रसंचालन, आंखों देखा हाल, अनुवाद, फिल्म, पत्रिका संपादन आदि का समावेश रहता है। विज्ञान और तकनीकी युग में हिंदी भाषा का विस्तार दिखाई दे रहा है। इस विकास में और एक दृष्टि जुड़ गई है । हमारी राष्ट्रीय भाषा की अत्यधिक लोकप्रियता और वैश्विक धरातल पर बढ़ते कदमों के कारण रोजगार की संभावनाएं तेजी से बढ़ गई है। विविध क्षेत्रों में हिंदी की स्वीकृति और प्रयोजनीयता बढ़ने के कारण हिंदी का पटल विकसित हो रहा है । केंद्र सरकार, राज्य सरकारों के अनेक विभागों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी प्रबंधक, टी. वी.- रेडिओ के अनुवादक, हिंदी मीडिया क्षेत्र के संपादक, संवाददाता, न्यूजरीडर्स, रिपोर्टर, प्रूफ रीडर, सूत्रसंचालक , रेडिओ जॉकी आदि की आवश्यकता होती रहती है।

बीज शब्द : अंतर्राष्ट्रीय, वैश्वीकरण, सर्जनशीलता, परास्नातक।

प्रस्तावना :

हमारी राष्ट्रभाषा ने परिवर्तन के युग को अपनाया है। संस्कृत से लेकर पालि, पालि से लेकर प्राकृत, प्राकृत से लेकर अपभ्रंश, अपभ्रंश से लेकर खड़ी बोली और खड़ी बोली से लेकर आज की आधुनिक हिंदी परिवर्तन को अपनाकर बढ़ रही है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट के माध्यम से साहित्येतर क्षेत्र में हिंदी कंप्यूटर प्रयोग सरल हो चुका है। संघ लोकसेवा आयोग, आई.ए.एस., आई. पी. एस., राज्य लोकसेवा आयोग, विदेशों में हिंदी अध्यापन/अनुवाद, समाचार लेखन, समाचार वाचक, हिंदी अधिकारी, हिंदी आशुलिपिक, मीडिया के लिए नाटक-एकांकी लेखन, फिल्म/धारावाहिक लेखन, अनुवाद, शिक्षा, पत्रकारिता, बैंकिंग, विज्ञापन, सिनेमा, पर्यटन आदि क्षेत्रों में हिंदी बढ़ रही है। हिंदी के ब्लॉग, पत्र -पत्रिकाएं, फ़ेसबुक, यू-ट्यूब, ट्विटर हमारे जीवन का हिस्सा बन चुका है। सोशल मीडिया से लेकर तमाम प्लेटफ़ॉर्म पर हिंदी का बोलबाला है । इसके साथ ही हिंदी में रोजगार या करिअर बनाने के प्रिन्ट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच और संस्थानों में हिंदी का प्रयोग हो रहा है। देश के कई ऐसे न्यूज चैनल रहे हैं जिसे समय और बाजार ने अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी प्रसारण करने पर मजबूर कर दिया है।

साहित्येतर क्षेत्र में हिंदी की भूमिका एवं रोजगार संभावनाएं

साहित्येतर क्षेत्र में हिंदी की भूमिका एवं रोजगार संभावनाओं में प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया महत्वपूर्ण बिंदु ठहराए जाते हैं। संचार माध्यम में समाचार, भेंटवार्ता, लेख, समीक्षा, फीचर, संवाद, वृत्तचित्र लेखन, पटकथा, संपादकीय, न्यूज रीडर , अनुवाद, इंटरप्रीटर, विज्ञापन, वार्ता, कमेंट्री, धारावाहिक, सूत्रसंचालन, साक्षात्कार लेखन आदि विविध तबकों पर चर्चा की जा सकती हैं। इन सभी आयामों में हिंदी में बहुत कुछ लिखा जा रहा है और रोजगार की संभावनाओं की मात्रा विपुल हैं। 'आधुनिक युग में हिंदी के विकास के कदमों को नापते हुए हिंदी भाषा देश और दुनिया में रोजगार प्राप्त करने का एक असरकारक माध्यम बन गया है।'[2]

वैश्वीकरण के इस समय में बाजार और व्यवसाय ने देश की सीमाओं को लांघ दिया है । भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने उत्पाद बेचने के लिए हिंदी का प्रयोग कर रही है। भारत संघ की राजभाषा हिंदी होने के कारण मंत्रालयों, संसद तथा सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कामकाज हो रहा है । इसके अंतर्गत सरकार और उसके नियंत्रणाधीन सभी कार्यालयों के लिए हिंदी पत्राचार का निर्धारित लक्ष्य दिया गया । सभी गतिविधियां ठीक ढंग से चल पड़े इसलिए केंद्र सरकार के कार्यालयों में अनुवाद और अन्य अनेक क्षेत्रों में हिंदी के कार्यान्वयन के लिए कर्मचारियों की भरती आवश्यक हो गई है। सरकारी कार्यालयों में अनुवादक, लिपिक, अधिकारी और वरिष्ठ अधिकारियों की नियुक्तियाँ की जाने लगीं । हिंदी से मराठी अथवा दूसरे किसी भाषा में अनुवाद करने के लिए वरिष्ठ, कनिष्ठ अनुवादक तथा लिपिक की आवश्यकता होती है । उसके बाद राजभाषा अधिकारी की कमी महसूस होती है। सहायक निदेशक, उप निदेशक, संयुक्त निदेशक और निदेशक जैसे पद हिंदी के क्षेत्र में कार्य करने वाले अधिकारियों के सामने संभावना के रूप में उभरने लगे । कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय में राजभाषा विभाग का गठन किया गया है । हिंदी में रोजगार के बढ़ते अवसरों की इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कई विश्वविद्यालयों ने आवश्यक पाठ्यक्रम गए हैं और उसकी पूर्ति हो रही है ।

समाचार लेखन

साहित्येतर लेखन में समाचार लेखन एक प्रमुख प्रकार है। समाचार लेखन और प्रस्तुति सजगता और सुरुचिपूर्ण की महत्ता दर्शाता है। समाचार लेखन समाचारपत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन से लिए किया जाता है। विषय के अनुसार समाचार की भाषा-शैली, आकार, शीर्षक में परिवर्तन आता है। समाचार लेखन और प्रस्तुति कला विविध विषयों की जानकारी, भाषा पर अधिकार, रोचकता, पठनीयता, उत्सुकता होनी चाहिए। समाचार लेखन में पाठकों/दर्शकों कि क्या, कहां, क्यों, कब, कैसे, कौन इन मायनों में रखकर पढ़ता/ सुनता है। आधुनिक समय में देश-विदेश में हिंदी अखबार - पत्रिका का बोलबाला है। हिंदी में समाचार लेखन रोजगार की संभावनाएं ज्यादा मात्र में है । यदि समाचार लेखन के सभी मायनों को ध्यान में रखकर रोजगार की दृष्टि से इसे अपनाया जा सकता है। 'हिंदी पढ़ने वाले छात्रों के बीच पत्रकारिता रोजगार का एक आकर्षक विकल्प है, जहां मेहनती और प्रतिभावान युवाओं के लिए बहुत संभावनाएं हैं।'[3] इस दौर में

हिंदी अखबार और न्यूज चैनल की संख्या भी काफी है। समाचार चैनलों और अखबारों के अलावा भी हिंदी के अनेक चैनल और पत्र-पत्रिकाएं हैं जहां हिंदी भाषी प्रतियोगियों के लिए दरवाजे खुले हैं।

अनुवाद

वैश्वीकरण के जमाने में जब दो अलग अलग भाषा के लोग संचार और व्यापार कर रहे हो तो अनुवाद की भूमिका और भी बढ़ जाती है। गूगल ट्रांस्लेट से अनुवाद का काम आसान हो गया है लेकिन कुछ प्रति शत ही सही अनुवादक की जरूरत पड़ती है। भारत में राजभाषा अधिनियम के तहत सभी सरकारी दस्तावेजों का अंग्रेजी और हिंदी भाषा में होना अनिवार्य है । इसी तरह क्षेत्रीय भाषाओं को भी मान्यता दी गई है कि इसके अलावा संसद या विधानसभा में इंटरप्रिटर की आवश्यकता होती है जिनका काम नेतागणों की बातों का सीधा-सीधा अनुवाद करना होता है। टी.वी. अथवा रेडिओ केंद्र में अनुवादक की भूमिका होती है। आज कई ऐसे संस्थान है जहां अनुवाद का प्रशिक्षण दिया जा रहा है । विदेशी भाषा से हिंदी में अनुवाद अथवा हिंदी से अन्य भाषा में अनुवाद करना रोजगार का एक प्रमुख अंग बन चुका है। अनुवाद के कारण सैकड़ों भाषा और हजार विषयों का ज्ञान का आदान प्रदान होता आया है। सरकारी दस्तावेज का अनुवाद हो या फिल्म की डबिंग कार्य हो, राजभाषा विभाग, गृहमन्त्रालय के अंतर्गत केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा काडर में कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी के पदों पर भर्ती की जाती है। हिंदी भाषा का प्रयोग सिर्फ देश में नहीं बल्कि विदेशों में भी बढ़ रहा है। इस बात को प्रमुख दृष्टि से देखते हुए कह सकते हैं कि जैसे जैसे हिंदी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है वैसे वैसे अनुवादकों- दुभाषियों की मांग बढ़ती जा रही है। राजनीतिक संस्थान, पर्यटन से जुड़े व्यक्ति अथवा संस्था, बड़े बड़े होटलों-रिसॉर्ट केंद्रों में अनुवादकों और दुभाषियों की जरूरत पड़ती है।

विज्ञापन

विज्ञापन जनसंपर्क की सर्वोत्तम विधा है। जनसंचार के माध्यम से हिंदी का प्रयोग बहुमात्रा में हो रहा है। मीडिया जगत प्रिन्ट हो या इलेक्ट्रॉनिक , विज्ञापन का बोलबाला दिखाई देता है। विज्ञापन की आवश्यकता इसलिए पड़ती है क्योंकि उत्पाद जनता तक पहुंचाना है और उत्पादकों को बाजार में पैठ लगानी हो तो विज्ञापन का सहारा लेकर यह संभव होता है । समाचार पत्र, टी.वी. , रेडिओ, पत्रिका, फिल्म, पोस्टर्स , हैंडबिल, साइनबोर्ड, बैलून इन विभिन्न माध्यमों के सहारे विज्ञापन छाया हुआ दिखाई देता है। हर कंपनी यही चाहती है कि उत्पाद बाजार में लंबे समय तक टिके और ब्रांड हिट हो जाए। विज्ञापन की भाषा, रंग-संयोजन प्रभावित होना जरूरी है ताकि पूर्वस्थापित उत्पाद से ध्यान हटाकर ने उत्पाद की ओर जनता आकर्षित हो जाए। 'हिंदी भाषा के माध्यम से विभिन्न जनसंचार माध्यमों में विज्ञापन क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं।'[4] विज्ञापन लेखन कार्य करना, लेखा प्रबंधन के रूप, ग्राफिक काम आदि सृजनात्मक कार्य जुड़े हुए हैं। हिंदी विज्ञापनों की भाषा रोचक, सरल और बोलचाल की है। वस्तु की खरीदारी करने पर रियायतें, उपयोग प्रमाण, वस्तु का वर्णन आदि में सहज हिंदी का प्रयोग हो रहा है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की सर्जनशीलता में लयात्मक भाषा, स्वरों का उतार चढाव आदि के कारण व्यवहारमूलक क्षेत्र में रोजगार का यह बिन्दु प्रभावशाली रहा है । विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी

अपना जलवा दिखा रही है। विज्ञापन जगत में रुचि रखनेवाले कर्मयोगियों को बाजार की मांग बन चुकी हिंदी का सही स्वर पकड़ सके , विज्ञापन की भाषा रोजगार कि अनंत संभावनाएं है।

रेडिओ जोकी/ रेडिओ समाचार प्रस्तुति

रेडिओ जोकी क्षेत्र में आवाज की दुनिया में श्रोताजनों को बांध सकते हैं। हिंदी भाषा में रेडिओ क्षेत्र में कार्य करनेवालों को श्रोता अभी तक भूले नहीं हैं। वर्तमान युग में अनेक चैनलों पर हिंदी भाषा के आर. जे. का राज चल रहा है। यदि एक रेडियो जॉकी विभिन्न प्रकार की जिम्मेदारियां निभाता हैं इनमे से प्रमुख जिम्मेदारी रेडियो शो की एंकरिंग करते हुए एक 'सूत्रधार' की भूमिका निभाना है. एक रेडियो जॉकी या आरजे स्क्रिप्ट के अनुसार शो चलाता है और संगीत के साथ-साथ ऑडियो विज्ञापन भी बजाता है. वह टेलिफोन, ईमेल सोशल मीडिया और एसएमएस जैसे विभिन्न प्लेटफार्मों के माध्यम से दर्शकों के साथ इंटरैक्ट करता है. उनकी मुख्य जिम्मेदारी यह है कि वे रचनात्मक हों और श्रोताओं को अपने साथ संलग्न करें और उन्हें प्रेरित करें. यह उनको बातचीत, हास्य या संगीत के माध्यम करना होता है. निश्चित रूप से अच्छी और स्पष्ट आवाज आर.जे के लिए आवश्यक प्रमुख कौशलों में से एक है. लेकिन यह केवल एकमात्र कौशल नहीं है जो किसी को एक अच्छा आरजे बना देगा। इसके अलावा आप में हास्य की अच्छी समझ और दर्शकों के साथ इंटरैक्ट करने और कनेक्ट करने की क्षमता भी होनी चाहिए। आर. जे. के साथ- साथ समाचार प्रस्तुति भी एक ऐसा क्षेत्र रोचक रहा है। सजगता और सरलता लेकिन प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया समाचार सुनना लोग पसंद करते हैं ।

हिंदी राजभाषा अधिकारी

राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 के अनुसार सभी मैनुअल, संहिताएं और असांविधिक प्रक्रिया साहित्य, रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक, नामपट्ट, साइन बोर्ड, पत्र शीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें भी हिंदी और अंग्रेजी (डिग्लॉट फॉर्मेट) में होंगी। केन्द्रीय संस्थानों और कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति की जाती है जो हिंदी का कामकाज सुगम बनाते हैं। इस क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं अधिक है। राजभाषा अधिकारी के रूप में जिम्मेदारी होती है कि कार्यालय अथवा विभाग में राजभाषा संबंधित विभिन्न नीतियों का सही से क्रियान्वयन करें एवं अपने कार्यालय में अधिक से अधिक काम हिन्दी में हो इसके लिए प्रयास करें ।अपने कार्यालय में कार्य करने वाले विभिन्न कर्मचारियों का हिंदी प्रशिक्षण करवाना एवं हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा सहित अन्य गतिविधियों का आयोजन करना भी राजभाषा अधिकारी एक कार्यों में से एक होता है।

इंटरप्रीटर

इंटरप्रीटर में रोजगार की विपुल संभावनाएं है । हिंदी के साथ और किसी भाषा पर पकड़ होनी चाहिए। इस मायने में यह कहा जा सकता है कि विदेशी भाषा आत्मसात की हो, तो इंटरप्रीटर की महत्ता और भी बढ़ जाती है। एक सफल दुभाषिया बनने के लिए, व्यक्ति को दोनों भाषाओं का धाराप्रवाह वक्ता या हस्ताक्षरकर्ता होना आवश्यक है। वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग और टेलीकांफ्रेंसिंग जैसी नई तकनीक की बदौलत, अब दोनों देशों के बीच यात्रा किए बिना भारत के कर्मचारियों और अन्य देशों में उनके समकक्षों के बीच बैठकें और सम्मेलन आयोजित करना संभव है। मीडिया हाउस, पर्यटन केंद्र, खेल क्लब, अंतर्राष्ट्रीय फर्म, निर्यात घर आदि के लिए रोजगार की संभावनाएँ अनंत हैं ।

पत्रकारिता

पत्रकारिता जनसंचार में डिग्री / डिप्लोमा के साथ हिंदी में अकादमिक योग्यता महत्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति रेडिओ/ टी. वी./ सिनेमा के लिए स्क्रिप्ट लेखक/ संवाद लेखक/ गीतकार के रूप में मांग रहती है। इस क्षेत्र में सृजनात्मक लेखन की आवश्यकता रहती है।

अध्यापन

अध्यापन एक ऐसा क्षेत्र है जो रोजगार की संभावनाओं को सशक्त बनाता है । के. जी. से लेकर परास्नातक और संशोधन कार्य के लिए अनेक अवसर शिक्षा संस्थानों को उपलब्ध किए जाते हैं। राष्ट्रीय परीक्षा पात्रता हासिल करने के बाद अभ्यार्थी विभिन्न पाठशालाओं, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में अध्यापक के पद प्राप्त कर सकते है।

कमेंट्री

राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में हिंदी में कमेंट्री किया जा रहा है । श्रव्य -दृश्य माध्यमों द्वारा किसी कार्यक्रम अथवा प्रतियोगिता का आंखों देखा हाल हजारों मील दूर बैठे श्रोता-दर्शकों को संप्रेषित करना एक रोचक कला है । कमेंट्रीकर्ता घटना की जानकारी देते रहता है। क्रिकेट हो या राष्ट्रीय कार्यक्रम, आजकल हम अंग्रेजी-हिंदी की मिली-जुली कमेंट्री सून रहे है । कमेंट्रीकला में प्रशिक्षण पाते ही हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायता हो सकती है । सबसे जरूरी है कि कमेंट्रीकर्ता को विषय का ज्ञान होना जरूरी हो ।

उद्घोषणा

रेडियो और टी. वी. पर अनेक वर्गों के लिए भिन्न भिन्न प्रकार के रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते है। इन कार्यक्रमों के प्रसारण से पहले उदघोषणाएं होती हैं। उद्घोषणा का मूल मतव्य यह है कि कार्यक्रम देखने या सुनने के लिए प्रेरित करना । अंग्रेजी अथवा अन्य भाषा के साथ -साथ हिंदी में रेडियो और टी.वी. पर किसानों, बच्चों, महिलाओं, युवकों के लिए अनेक कार्यक्रमों का प्रक्षेपण किया जाता है। स्पष्ट आवाज, शुद्ध उच्चारण, सुरीले स्वरपातों को सुनकर

श्रोता -दर्शक सुनते हैं। रोजगार की दृष्टि से यदि उद्घोषणा की भाषिक क्षमता और उच्चारण तथा आत्मविश्वास और अभ्यास की मात्रा उद्घोषक में हो, तो सफल उद्घोषक बनने में कोई कठिनता नहीं है। इस संबंध में प्रशिक्षण टी. वी. तथा आकाशवाणी के कलाकारों को दिया जाता है।

सूत्रसंचालन

किसी भी मंचीय कार्यक्रम जैसे संगोष्ठी, सम्मेलन , कार्यशाला, पुस्तक प्रकाशन, संगीत जलसा आदि में सूत्रसंचालक की आवश्यकता होती है । किसी भी कार्यक्रम को बिगाड़ना हो अथवा बिगड़नेवाले कार्यक्रम को सूत्रसंचालन के माध्यम से संवारना हो, यह काम सूत्रसंचालक का होता है। आधुनिक दौर में हिंदी में अनेक धरातल पर कार्यक्रमों का मंचन हो रहा है। जैसे जानेमाने स्वर उपासकों का कार्यक्रम, एलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर राष्ट्रीय प्रतियोगिता आदि , इस समय सूत्रसंचालक की अत्यंत आवश्यकता होती है।

विज्ञापन लेखन कला

हिंदी समाचार पत्र, टी. वी., रेडिओ अथवा फिल्म हो, विज्ञापन हर जगह छाया हुआ है। विज्ञापन के बल पर कंपनियां अपना ब्रांड बाजार में बिठाना चाहती है। आज के वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के दौर में विज्ञापन एक सशक्त रूप में सामने आया है। विज्ञापन का क्षेत्र बहुआयामी होने के कारण सिर्फ उत्पाद कंपनियों के वस्तुओं का प्रचार और प्रसार नहीं किया जाता है बल्कि जनकल्याण, शैक्षणिक संस्थाओं और सूचनाओं के प्रचार -प्रसार में विज्ञापन अपनी भूमिका निभा रहा है। हिंदी आज बाजार की भाषा बन चुकी है। हिंदी बोलने और समझनेवालों की संख्या में वृद्धि होने के कारण हिंदी में विज्ञापन तैयार हो रहे हैं। विभिन्न जनसंचार माध्यमों में विज्ञापन व्यवसाय में अपार संभावनाएं हैं।

ट्रैवल गाइड

देश में पर्यटन स्थलों को देखने के लिए देशी-विदेशी पर्यटक आते-जाते रहते हैं। ऐसे में हिंदी भाषिकों को पर्यटन स्थलों की जानकारी अथवा वार्तालाप करने के लिए हिंदी गाईड की जरूरत रहती है। अहिंदीतर प्रदेश में हिंदी भाषिक पर्यटकों के लिए हिंदी गाईड की मांग रहती है।

किसी भी क्षेत्र में मशहूर उत्सवमूर्ति का साक्षात्कार लेना समय की मांग रहती है। वाक्कला के चातुर्य पर साक्षात्कार आयोजित करना संभव है। हिंदी में राजनीतिज्ञ, कलाकार और अनेक हस्तियों का साक्षात्कार सफल हुआ है।

इसतरह हिंदी में फीचर- सिनेमा- वृत्तचित्र- टी.वी. लेखन के लिए मांग रहती है। घोस्ट राइटिंग में भी हिंदी का बोलबाला है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में यह कह सकते है कि बैंक, मीडिया, फिल्म उद्योग आदि क्षेत्रों में हिंदी की उपयोगिता बढ़ रही है। आज हिंदी भाषा के बढ़ते चलन और संभावनाओं को उजागर किया है। विविध क्षेत्रों में इसकी स्वीकृति और प्रयोजनीयता बढ़ने से हिंदी को नई दृष्टि से देखा जा रहा है। आज के समय में किसी भाषा या बोली के जीवित रहने के लियी मात्र साहित्य की नहीं, बल्कि उसे व्यवसाय, विज्ञान और रोजगार की भाषा बनाने की भी जरूरत होती है। अंग्रेजी के अंतरराष्ट्रीय भाषा होने का सबसे बड़ा कारण व्यवसाय है । आज हिंदी भाषा को वैश्विक रूप प्राप्त हुआ है। सौ से ज्यादा देशों में हिंदी भाषा विद्यमान है। यदि भाषा में विस्तार और विकास की मात्रा कम है, इसका मतलब है रोजगार की संभावना कम है।

संदर्भ सूची

1. सं डॉ. वर्मा धीरेन्द्र, हिंदी साहित्य कोश भाग 1 पृ 950.
2. डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र, मीडिया लेखन-सिद्धांत और व्यवहार, पृ 60
3. डॉ. अरोरा हरीश, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेखन, पृ 120
4. प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, डॉ पवन अग्रवाल - मीडिया लेखन कला, पृ 122

आधार ग्रंथ

1. सं डॉ. वर्मा धीरेन्द्र, हिंदी साहित्य कोश भाग 1
2. डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र, मीडिया लेखन-सिद्धांत और व्यवहार, संजय प्रकाशन, दिल्ली
3. डॉ. अरोरा हरीश, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेखन, के. के. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
4. प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, डॉ पवन अग्रवाल - मीडिया लेखन कला, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ